Revision Class

डॉ रेणु कुमारी
भारती मण्डन महाविद्यालय
रहिका

बी० ए० पार्ट - II
PAPER - IV
DATE - [illegible]

राजनीति विज्ञान प्रतिष्ठा

दबाव समूह (PRESSURE GROUPS)

दबाव समूहों के प्रकार -

(2) भारतीय राजनीति में समुदायात्मक दबाव समूह (Associational Pressure Groups In Indian Politics) - समुदायात्मक दबाव समूह की मुख्य विशेषता हितों की पूर्ति करना होता है। जो अपने आधुनिक परिवेश में भारतीय राजनीति में सक्रिय है। इनमें प्रमुख है— व्यवसायिक संगठन, कृषक संगठन इत्यादि।

श्रमिक संगठन श्रमिकों के संघ है जो सामूहिक कार्य द्वारा अपने हितों की रक्षा करते हैं। राष्ट्रीय आंदोलन ने श्रमिक संगठनों को अपने हितों की पूर्ति के लिए संगठित होने के लिए प्रोत्साहित किया। वर्तमान समय में श्रमिक संघों का संबंध राजनीतिक दलों से है। भाजपा के नेतृत्व में भारतीय मजदूर संघ, मार्क्सवादी साम्यवादी दल के नेतृत्व में इण्डियन

नेशनल ट्रेड यूनियन ~~ऑफ~~ कांग्रेस और साम्यवादी पार्टी के नेतृत्व में ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस क्रियाशील है।

व्यापारियों के हित समूहों में आधुनिक दबाव समूह में कार्य करने की सामर्थ्य सबसे अधिक है। व्यापारियों के संघ कई प्रकार के हैं— जैसे उद्योग समूह, साम्प्रदायिक समूह, क्षेत्रीय समूह, अखिल भारतीय समुदाय तथा बड़े व्यवसायिक घराने। व्यापारियों के दबाव समूह अधिक साधन सम्पन्न है। व्यापारियों के संगठन में आजकल 'फेडरेशन ऑफ इण्डियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री (F.I.C.C.I) अत्यन्त आधुनिक और प्रभावशाली दबाव समूह माना जाता है। यह लगभग एक लाख से भी ज्यादा छोटी बड़ी व्यवसायिक इकाइयों का प्रतिनिधित्व करते हैं। फेडरेशन को प्रतिवर्ष प्रधानमंत्री द्वारा उद्बोधित किया जाता है। अन्य मंत्रीगण जैसे वित्तमंत्री और वाणिज्य मंत्री भी फेडरेशन के वार्षिक बैठक में भाग लेते है।

Scanned with CamScanner

कृषकों के हित समूह भी राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय होता है। सन् 1936 से ही अखिल भारतीय किसान सभा (All India Kisan Sabha) एक हित समूह के रूप में सक्रिय रही है, किन्तु किसान सभा पर साम्यवादी दल का नियंत्रण रहा है। आज भी किसान साम्यवादी दल की भुजा के रूप में कार्यरत है। अन्य दलों ने भी अपने-अपने कृषक संगठन बनाए हैं, जैसे-समाजवादी दल की हिन्द किसान पंचायत तथा वामपंथी दलों की संयुक्त किसान सभा कभी-कभी सक्रिय हो जाती है।

मार्च 1977 के चुनावों के बाद केन्द्र में जनता पार्टी की स्थापना से किसान लॉबी का प्रभाव बढ़ने लगा। किसान सम्मेलन और किसान रैली के माध्यम से चौधरी चरण सिंह ने किसानों को मजदूर संघों को संगठित करने का प्रयत्न किया। किसान लॉबी के ही कारण प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को चौ० चरण सिंह से समझौता करना पड़ा उन्हें मंत्रिमंडल में उपप्रधानमंत्री पद पर

पुनः शामिल करना पड़ा। महेन्द्र सिंह टिकैत के नेतृत्व में किसानों के एक प्रभावशाली संगठन भारतीय किसान यूनियन का उदय हुआ। उत्तरप्रदेश में किसानों को शामिल करके उन्होंने उत्तरप्रदेश सरकार से टक्कर ली। 25 अक्टूबर 1988 से 31 अक्टूबर 1988 तक नई दिल्ली में इण्डिया गेट के आगे बोट क्लब पर डेढ़ दो लाख किसानों को इकट्ठा करके भारतीय किसान यूनियन ने अपनी आर्थिक मांगों को रखने का एक नया मार्ग ढूंढा।

स्वतंत्रता आन्दोलन में छात्र वर्ग का सक्रिय योगदान रहा और आज भी सारे विद्यार्थी राजनीतिक दृष्टि से जागरूक है। विद्यार्थी परिषद का संबंध जनता से है तो स्टूडेंट्स फेडरेशन का संबंध साम्यवादी दल से। कांग्रेस दल का अपना नेशनल यूनियन ऑफ स्टूडेंट्स है। कई प्रकार के सांप्रदायिक संगठन भी अपने संघों के माध्यम से विशिष्ट हितों की अभिवृद्धि में लगे रहते हैं। इन संघों में हिन्दू सभा, मुस्लिम सभा, पारसी एसो. मिशन आदि प्रमुख हैं।